Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.I/ Feb; 12pp.1-4

डॉ. साताप्पा शामराव सावंत

ISSN:-2230-7850

Research Papers

'यादों के झरोखे' का परिचयात्मक अनुशीलन

डॉ. साताप्पा शामराव सावंत

प्रस्तावना :–

'यादों के झरोखे'.डॉ. एम्.एल शहारे द्वारा लिखित दलित आत्मकथा है, जिसका प्रकाशन श्री. नटराज प्रकाशन दिल्ली की ओर से. सन् 2005 में हुआ। प्रस्तुत आत्मकथा का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लेखक ने लिखा है ''एक दलित अधिकारी मनुवादियों के बीच में किसी तरह अपना फर्ज पूरा करता है। उसकी जानकारी मेरी यह आत्मकथा देगी, क्योंकि मैं साहित्य – कार नहीं हूँ , राजनेता भी नहीं हूँ, पर एक उच्च अधिकारी जरूर रहा हूँ। इसलिए मेरी आत्मकथा अच्छे पद संभालने वाले की आत्मकथा है। दलित समाज में साहित्यकारों ने, राजनेताओं ने, और समाज सेवियों ने विभिन्न भाषाओं मे अपनी – अपनी आत्मकथा लिखी है। किंतु दलित मेरे जैसे की आत्मकथा आपने कम पढी होंगी।'' (भूमिका पृ. टपपप) लेखक को विश्वास है कि प्रस्तुत आत्मकथा से प्रेरणा लेकर वर्तमान युवा पीढी के लिए इतिहास हमें सवर्णे की कूट चाल समझनी होगी। प्रस्तुत आत्मकथा ग्यारह उपशीर्षको में विभिजित है जिसमें लेखक के जन्म से लेकर प्रेरण्स्त्रोत तक की संघर्ष गाथा चित्रित है। लेखक का जन्म मध्यप्रदेश का छिंदवाडा जिन्ले के सौंसर तहसील के मोहगाँव नामक गाँव में हुआ।

'जन्मस्थान' नामक उपशीर्षक वाले परिच्छेद में लेखक ने अपना पारिवारिक ब्यौरा प्रस्तुत किया है। लेखक के पिता गाँव के संतरे बेचने का काम करते थे। लेखक के पिता ने लेखक के सामने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर में शिक्षा के बारे में आदर्श रखा था। लेखक ने गाँव के वर्ण विद्वेषी परिवेश का चित्रण इस प्रकार प्रस्तुत किया है "उस जमाने में अस्पृश्यता बहुत तेज और प्रखर थी।छुआछूत के कारण हमें सवर्ण लोग अपने कुएँ से पानी भरने नहीं देते थें। स्कूल में भी एक कुआँ था। उस कुएँ पर दलित समाज के लोगों को पानी भरने की रोक थी। गाँव में एक मंदिर था। इस मंदिर में भी दलित वर्ग के लोगों को जाने नहीं दिया जाता था।'' (यादों के झरोखें पृ.15)

गाँव में अधिकांश मारवाडी समाज के साधन, संपन्न लोग रहने के कारण गाँव में एक ओर ऊँची हवेलियाँ नजर आती थी। तो दूसरी ओर दलितों की झोपडीनुमा बस्तियाँ कुल मिलाकर गाँव का वातावरण विषमता को बढावा देने वाला था। गाँव में गरीबी एवं दरिद्रता नजर आती थी। गाँव में चोखामेला की मुर्ति को नहलाकर लोग ईश्वर से वर्षा की मन्नत मांगते थे। महार समाज में व्याप्त रीति रिवाज और सन् 1956 ई. के बाद धर्मांतर के पश्चात् महार समाज में आया परिवर्तन लेखक ने विस्तार से चित्रित किया है।

' मेरा बचपन ' उपशीर्षक वाले अध्याय में अपने बचपन के साथ अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि स्पष्ट की है। लेखक का जन्म 6 जुलाई सन् 1928 ई. को. हुआ। जब वे छह वर्ष के हो गए तब गाँव की पाठशाला में दाखिला करवाया गया। लेखक छूट्टी के दिनों खेत में मजदूरी करके स्कूल की फीस भरते थे। अगली पढाई के लिए लेखक को सावनेर भेजा गया। सावनेर के लोग डॉ. आंबेडकर के विचारों से काफी प्रभावित रहे। सावनेर के लोगों से लेखक को प्ररेणा मिली। सावनेर के स्कूल में लेखक हमेशा अच्छे अंक प्राप्त करते रहें। संत गाडगेबाबा को नजदीक से सुनने का अवसर लेखक को यहाँ पर प्राप्त हुआ। नागपुर में करीब से. डॉ. आंबेडकर को देखने का सौभाग्य लेखक को प्राप्त हुआ। उन्हे देखकर लेखक काफी प्रभावित हुए। सन्. 1942 में काँग्रेस का अधिवेशन सावनेर में आयोजित किया गया तब दंगों की वजह से करीब 15 दिन स्कूल बंद थे। लेखक भालेराव नामक शिक्षक के घर पर रहने के लिए गए थे। लेखक ने पंढरीनाथ पाटील द्वारा महात्मा फुले का चरित्र पढा जो उनके जीवन का प्रेरणा स्त्रोत बन गया। लेखक मैट्रीक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गए। जो उनके गाँव के दलित समाज के प्रथम छात्र थे।

प्रस्तुत आत्मकथा का तीसरा अध्याय उपशीर्षक 'उच्चशिक्षा' है। प्रस्तुत अध्याय में लेखक ने अपनी उच्चशिक्षा का लेख – जोखा प्रस्तुत किया है। लेखक ने अपने पिताजी के परामर्श पर उच्चशिक्षा प्राप्त की । लेखक ने साइंस कॉलेज नागपुर में प्रवेश लिया। उन्होंने बीएस. सी. की कक्षा में प्रवेश लिया। सन 1950 में वे बी.एस. सी. पास हो गए अगली पढाई जारी रखने के लिए उन्होंने एमएस सी. में प्रवेश लिया। इसी समय लेखक का विवाह देवाजी खोब्रागडे की पुत्री श्शांता से हुआ आगे चलकर लेखक एसएस. सी.

Please cite this Article as : *डॉ. साताप्पा शामराव सावंतें , ''यादों के झरोखे'का परिचयात्मक अनुशीलन*: **Indian Streams Research Journal (Feb ; 2012)**

में. उत्तीर्ण हुए।

प्रस्तुत आत्मकथा का चौथा उपशीर्षक ' मिलिंद कॉलेज की यादें' है। मिलिंद कॉलेज औरंगाबाद में लेखक ने बॉटनी के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। तब वे डॉ. आंबेडकर के संपर्क में आए थे डॉ. आंबडेकर द्वारा चलाए गए विभिन्न आंदोलनों को करीब से देखने तथा उनमें सहयोग देने का सौभाग्य लेखक को प्राप्त हुआ। 6 दिसंबर, 1956 ई. को डॉ. आंबेडकर का महापरिनिर्वाण हो गया । तब लेखक उनकी अंतयात्रा में सहभागी हो गए थे।पीएच.डी. करने हेतु लेखक पूसा इंस्टीटयूट में ज्वाइन हो गए। इसी समय वे दलित आंदोलन की गतिविधियों से जूडे रहे। साथ – साथ अपने रिसर्च वर्क से भी जूडे रहे। आगे चलकर लेखक को पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई। लेखक को औरंगाबाद के कॉलेज में प्राचार्य के रूप में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। प्राचार्य पद पर रहते उन्हे कई मुश्किलों का सामना करना पडा। प्राचार्य पद पर संभालते समय लेखक ने अपने कॉलेज में अनेक शैक्षिक गतिविधियों को चलाया। वहाँ प्राचार्य पद उन्होंने करीब पांच वर्ष तक कार्य किया। उनके अनुशासन में अप्रिय घटना नहीं घटीं। आगे चलकर लेखक की नियुक्ति एम. पी. एस. सी. में. सदस्य के रूप में हो गई। वहां पर उन्होंने संविधान में दिए गए निर्देशों के अनुसार आरक्षण का कोटा पूरा करने का कार्य किया।

प्रस्तुत आत्मकथा का छठा उपशीर्षक संघ लोकसेवा आयोग में है । प्रस्तुत अध्याय में लेखक ने संघ लोकसेवा आयोग में सदस्य के रूप में अपने कार्यकाल का वर्णन प्रस्तुत किया है। संघ लोकसेवा आयोग में सदस्य के रूप में अपने कार्यालय का वर्णन प्रस्तुत किया है। संघलोक सेवा आयोग में श्शहरे एक मात्र सदस्य रहे हैं। जिनकी आयु केवल 40 वर्ष थी। एम.पी.एस.सी.की तुलना में यु.पी.एस.सी. में बहुत काम हुआ करता था। यु. पी. एस. सी. सदस्य के रूप में निवृत्त होने से पूर्व लेखक को भारतीय कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मंडल का अध्यक्ष बनाया गया। इस पद पर स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने लेखक की नियुक्ति की थी। सन् 1975 में शहारे को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। इन संस्थानों से जुडे रहते हुए लेखक को मास्को लंदन, पेरिस, जाने का अवसर मिला, प्रशासनिक सेवा में काम करते समय संविधान के तहत आरक्षण नीति और कमचारियाँ के हितों के लिए अच्छे निर्णय एक सदस्य के रूप में लेखक ने लिए थे। अवधेश प्रताप सिंह विश्वाविद्यालय रीवॉ मध्यप्रदेश में कुलपति के रूप में डॉ. शहारे की नियुक्ति होने वाली थी। इसी दरम्यान डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर राष्ट्रीय संस्थान में कार्य करने का अवसर मिला, इसके निर्माण में शहर का योगदान असाधारण रहा। वहँ पर नए – नए पाठय्क्रम चलाए। लेखक ने स्वयं कुछ सामाजिक संस्थाओं का निर्माण किया।

प्रस्तुत आत्मकथा के सातवें अध्याय का उपशीर्षक 'पीपल्स एज्युकेशन सोसायटी बॉम्बे है। प्रस्तुत अध्याय में डॉ. बाबासाहेब आंबडेकर द्वारा स्थापित पीपुल्स एज्युकेशन सोसायटी से संबंधित गतिविधियों का जिक्र हुआ है। डॉ. आंबडेकर द्वारा संस्था संबंधी कार्यों का विवरण लेखक ने विस्तार से दिया है।

प्रस्तुत आत्मकथा के आठवें अध्याय का उपशीर्षक है ' सामाजिक संगठन ' है। प्रस्तुत अध्याय में लेखक ने डॉ. आंबेडकर द्वारा संस्थापित सामाजिक संगठनों संबंधी जानकारी प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत आत्मकथा के नौवें अध्याय का उपशीर्षक 'दलित पैन्थर्स' है। डॉ. आंबेडकर के पश्चात् समता सैनिक दल अपनी अस्मिता खो बैठा। दलित समाज में 'दलित पेन्थर्स ' नाम से संगठन बना। इसके साथ ' बामसेफ ' बहुजन समाज पार्टी आदि संगठनों की कार्यप्रणाली पर लेखक ने प्रस्तुत अध्याय में प्रकाश डाला हैं।

मोहगाँव से 'महू' तक प्रस्तुत आत्मकथा का दसवें अध्याय का उपशीर्षक है। जिसमें लेखक जीवन यात्रा का विवरण दिया है।

मेरे प्रेरण्स्त्रोत प्रस्तुत आत्मकथा का अंतिम अध्याय का शीर्षक है। प्रस्तुत अध्याय में लेखक ने अपने जीवन प्रेरणास्त्रोतों पर प्रकाश डाला है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महात्मा फूले, कर्मवीर दादासाहेब गायकवाड, गाडगे महाराज, इंदिरा गांधी आदि महानुभाव लेखक के जीवन के प्रेरणास्त्रोत बने।

निष्कर्ष

डॉ. एम. एल. शहारे द्वारा लिखित 'यादों के झरोखें' दलित आत्मकथा का परिचयात्मक अनुशीलन करने के पश्चात् जो निष्कर्ष सामने आए है वह इस प्रकार है – शहारे एक सामान्य दलित परिवार से आए और अपनी श्शैक्षिक योग्यता, परिश्रम, लगन के बल पर विविध वरिष्ठ सरकारी पदों पर कार्यरत रहें। श्शहारे के श्शैक्षिक जीवन में डॉ. आंबेडकर प्रेरणास्त्रोत बने। लेखक का छात्र जीवन घात–प्रतिघात की घटनाओं से भरा है। लेखक का व्यक्तित्व संघर्षशील रहा है। अनेक संकटों का सामना करके लेखक ने शिक्षा क्षेत्र की अत्युत्तम उपाधियों को अपने नाम कर दिया था। दुनिया में ऐसे कम लोग है जिन्हें डॉ. आंबेडकर के संपर्क में आने का सुवर्ण अवसर प्राप्त हुआ। ऐसे व्यक्तियों में डॉ. श्शहारे रहे हैं। प्राचार्य , एम. पी. एस. सी., यु. पी. एस. सी. में वरीष्ठ अधिकारी के रूप में शहारे का प्रशासक के रूप में पाठकों के दिलों–दिमाग पर छा जाता है। प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत रहते समय उनका ध्यान दलित उत्थान में लगा रहा। डॉ. आंबेडकर द्वारा चलाए गए आंदोलनों में शहारे ने खुलकर भाग लिया था।

संदर्भ – 1) यादों के झरोखे – डॉ. एम. एल. शहारे
श्री. नटराज प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2006 ई.

Please cite this Article as : *डॉ. साताप्पा शामराव सावंर्ते , ''यादों के झरोखे'का परिचयात्मक अनुशीलन* **: Indian Streams Research Journal (Feb ; 2012)**